दूरदर्शन का माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सुमन शर्मा*

सारांश

समाज के सभी वर्गो जातियों, प्रदेशो में हमे सभी आयु–वर्ग के व्यक्तियों के दैनिक किया कलायों में दूरदर्शन का प्रभाव नजर आ रहा है। शोधकर्मी द्वारा ''दूरदर्शन का माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सामाजिक वृद्धि तथा उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' विषय को चुना गया है। उसका मुख्य उद्देश्य सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विधालयों के विधार्थियों की सामाजिक बृद्धि तथा व्यवहार पर दूरदर्शन के प्रभाव का अध्ययन करता है इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है आकड़ों के संकलन के लिए 120 विधार्थियों को चुना गया तथा स्वनिर्मित प्रशनशाली तैयार की गयी है इस अध्ययन द्वारा निष्कर्ष निकाला गया है कि सरकारी व निजी विधालयों के विधार्थियों में दूरदर्शन के प्रभाव में अन्तर नही है तथा दूरदर्शन का विधार्थियों की समाजिक व बुद्धि व व्यवहार पर साधारण प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना

दूरदर्शन हमारे समाज में काल्पनिक मनोरंजन व सूचनाओं का प्रमुख संग्राहक होता जा रहा है तथा भारत में इसका तीव्र गति से प्रभार हो रहा हैं। दूरदर्शन के बढ़ते हुए प्रभाव ने जीवन व व्यवहार में अदा करने वाले प्रभाव को इतना अधिक प्रभावित किया है कि ये हमारे कार्यो व विचारों का निर्धारण कर रहा है।

दूरदर्शन का शैक्षिक जगत में महत्व बढ़ने के कारण इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव बच्चों पर पड़ा है। वर्तमान समय में एकल परिवार, कामकाजी माता–पिता व अन्य अनेक कारणों व परिवेश के कारण बच्चें दूरदर्शन से अधिक से अधिक जुड़ रहे है। वे अपना अधिकाशं खाली समय टी.वी के सामने बिता रहे है। जिसका प्रभाव उनके आदर्शो जीवन मूल्यों, व्यवहार, आचार–विचार, रहन–सहन पर पड़ रहा है अर्थात उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित हो रहा है क्योंकि बच्चों में अनुकरण की प्रवृति अधिक होती है तथा टी.वी. पर प्रसारित होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम की अच्छी बुरी बातों को आत्मसात करते है। टी.वी. प्रसारित कार्यक्रमों के नायक–नायिका को अपना आदर्श मानकर वे उन्ही का अनुकरण करते है जो वास्तव में सम्भव नही होता क्योंकि वास्तविक जीवन उससे भिन्न होता है तथा जब बच्चा ऐसा करने में कठिनाई महसूस करता है अथवा वह स्वयं को असमर्थ महसूस करता है तो उसमे निराश के भाव आते है जो उसे तनाव व कुंठा की ओर ले जाते है। दूरदर्शन पर मनोरंजन कार्यक्रमों के साथ–साथ विभिन्न सूचना परक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जाते है जो बालक का ज्ञानवर्धन है। दूरदर्शन के माध्यम से बालक सामाजिक सम्बंधों का जीवनोपयोगी मूल्यों कों अधिक बेहतर ढंग से सीखता है क्योंकि यह एक श्रव्य–द्वश्य माध्यम है तथा देखी हुई वस्तु की स्थायी स्मृति होती है तथा वह असानी से प्रयोग में लायी जा सकती है। दूरदर्शन पर प्रसारित क्विज, टर्निग पॉइन्ट, परख द वर्ल्ड दिस वीक आदि कार्यक्रमों के माध्यम से ज्ञानवर्धक सामग्री परोसी जा रही है जिससे बालकों का ज्ञानवर्धन व उनकी क्रियाशीलता बढ़ रही है तथा उनके चिन्तन का परिष्कृत रुप से विकास हो रहा है। परन्तु यह तभी हो सकता है जब प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री उचित हो तथा बच्चों को इन कार्यक्रमों के बारे में सही मार्गदर्शन मिले।

दूरदर्शन के बढते हुए प्रभाव को देखते हुए प्रश्न उठता है कि क्या दूरदर्शन बालाकों का ज्ञानवर्धन करते हुए उनके व्यवहार व जीवन–मूल्यों को नई दिशा दे रहा है ध क्या दूरदर्शन से बच्चों में अधिक सामाजिक समझ व व्यवहार कुशलता उत्पन्न हो रही है ध कही ऐसा तो नही कि दूरदर्शन बच्चों को कुण्ठित कर उनके व्यक्तित्व का विघटन कर रहा हैध कही ऐसा तो नही कि दूरदर्शन के कारण बालक उस आधारहीन काल्पनिक संसार को वास्तविक जीवन से जोड़ने का प्रयास करता है जिसका कोई आधार ही नही तथा उसका यह प्रसाय असफल होने पर वह तनाव ग्रस्त हो रहा है। टेलीविजन परिदृश्य में हाल में पहले की तुलना में हिंसक व आपराधिक प्रवति के कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है। इससे

*रिसर्च स्कॉलर, टांटिया युनीवर्सीटी, श्री गंगानगर(राजस्थान)

बालकों के दिमाग में गलत विचारों को बढावा मिलता है जो कि हमारे समाजिक परिवेश में जहर घोल रहे है व आस–पास के वातावरण को दूषित कर रहे है। अतः शोधकर्त्री ने यह जानने का प्रयास इस अध्ययन के द्वारा किया है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव किस प्रकार पड़ रहा है। उनके अभिभावकों द्वारा उनके टी.वी. देखने को किस दृष्टि से देखा जा रहा है। विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार टी.वी. व उनके व्यवहार टी.वी. से किसी स्तर तक प्रभावित होत है।

समस्या का औचित्य

टेलीविजन का प्रभाव समाज के सभी वर्गो, जातियों, प्रदेशों में यह परिवर्तन हमें सभी आयु–वर्ग के व्यक्तियों के दैनिक क्रिया–कलापों में नजर आ रहा हैं विशेषकर किशोर आयु वर्ग के बालक सबसे अधिक टी.वी से प्रभावित हो रहा है। इस वर्ग पर टेलिवीजन का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ रहा है। आज टी.वी. एक ऐसा यंत्र है जो घर–घर में उपलब्ध है, जिससे एक नयी प्रवृति, नयी–सामाजिक सांस्कृति परम्परा व अनेकों नयी समस्याओं का प्रादुर्भाव टेलीविजन के बढ़ते चैनलों के साथ–साथ हुआ है। इससे विद्यार्थीयों के व्यवहार में विसंगतियां बाधायें उत्पन्न हो रही है। टी.वी. चैनल्स पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के बहुत से पक्ष छात्रों पर अपना प्रभाव डाल रहे है। यदि विद्यार्थियों पर इन विभन्न चैनल्स पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रभाव से उनकी सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वैज्ञनिक रुप से किया जाये तो हमें एक उचित मागदर्शन मिल सकता है। उपरोक्त सभी कारणों से प्रेरित होकर शोधकर्त्री ने अपने शोध अध्यन के लिए इस विषय (समस्या) का चयन किया है। जिससे कि वह दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कर सकें।

समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने अपनी चयनित समस्या का शीर्षक निम्न रखा है

''दूरदर्शन का माध्यमिक स्तर के विधाथियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

शोध में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों का परिभाषीकरण

दूरदर्शन–

दूरदर्शन का शाब्दिक अर्थ है– दूर से देखना। भारत में टेलीविजन को दूरदर्शन के नाम से भी जाना जाता है। यह दर्शकों के समक्ष सही घटना, दृश्य एवं विवरण को यथावत् रखने में सफल है। इसमें दर्शक एक साथ देखने एवं सुनने दोनों का कार्य करते है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालय–

ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 8 से 10 के विद्यार्थियों को शिक्षण कराया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है।

राजकीय विद्यालय–

ऐसे विद्यालय जिनका पूरा संचालन सरकार के कानूनों के अनुरुप चलता हैं। विद्यालय प्रशासन तथा कर्मचारियों को वेतन सरकार द्वारा प्राप्त होता है। ऐसे विद्यालय राजकीय विद्यालय कहलातें है।

निजी विद्यालय–

ऐसे विद्यालय जिनका पूरा संचालन निजी संस्था या समुदाय द्वारा होता है ऐसे विद्यालयों में कर्मचारियों को वेतन संस्था द्वारा ही दिया जाता है। ऐसे विद्यालय निजी विद्यालय कहलातें है।

विद्यार्थी– विद्यार्थी का अर्थ वह व्यक्ति जो कि गहन अध्ययन में व्यस्त हो, विशेषतः वह जो कि स्वतंत्र रुप में अध्ययनरत हो अथवा वह जो किसी उच्च शिक्षण संस्था में उपस्थिति देकर अध्ययनरत् हो।

समाजिक बुद्धि–

समाजिक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्तियों को समझने तथा उनके साथ व्यवहार करने की योग्यता से है। इसके आधार पर वह उचित अनुचित का ध्यान रखते हुए लोगों के प्रति व्यवहार करता है। इसके कारण व्यक्ति में सामाजिक कुशलता बढ़ती है और वह समाज में लोकप्रिय हो जाता है। वास्तव में यह अन्य व्यक्तियों के साथ परस्पर अन्तः क्रिया करने की योग्यता की द्योतक है।

व्यवहार–

''जीवन का आभास या प्रभाव देने वाली प्रत्येक क्रिया व्यवहार है। इसमें संज्ञानात्क (ज्ञान, चिन्तन, स्मरण आदि) भावात्मक (क्रोध, खुशी, ईर्ष्या आदि) एवं क्रियात्मक (चलना, खेलना आदि) सभी प्रकार की प्रक्रियाओं का समावेश किया जाता है। अतः व्यवहार से तात्पर्य सम्पूर्ण जीवन की प्राणी मात्र की क्रियाओं से है।''

उद्देश्य

1. दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।
2. दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

2 माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वले कार्यक्रमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

3 माध्यमिक स्तर के सरकार विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थी की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

चर

प्रस्तुत शोध कार्य में चरों का विभाजन निम्नानुसार किया गया है–

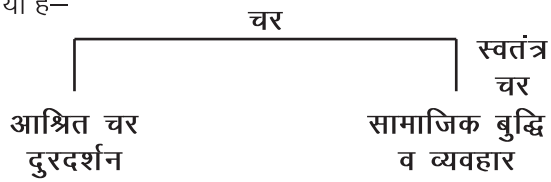

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रुप में श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यायदर्श के रुप में श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ क्षेत्र के 2 सरकारी व 2 निजी विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श सारणी
सारणी संख्या 1

विधार्थी	सरकारी विद्यालय	निजी विद्यालय	कुल
छात्र	30	30	60
छात्र	30	30	60
कुल	60	60	120

शोध विधि

शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

उपकरण

शोधकर्त्री ने इस शोधकार्य की सफलता, समस्या की प्रकृति व प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखतें हुए स्वनिर्मित का निर्माण किया है।

1. सामाजिक बुद्धि व व्यवहार परीक्षण
2. दूरदर्शन का सामाजिक बुद्धि व व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव की अध्ययन मापनी।

सांख्यिकी विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा आकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यकीय विधियां अपनाई गयी–

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. टी परीक्षण
4. सहसम्बंध

परिसीमाएँ

शेधकर्त्री द्वारा अपने शोधकार्य हेतु निम्न परिसीमाओं का निर्धारण किया गया–

1. प्रस्तुत शोधकार्य में श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ क्षेत्र के विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
2. शोध में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी शामिल किये गये।

3. प्रस्तुतत शोधकार्य में श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ क्षेत्र के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों को शमिल किया गया।
4. शोधकार्य हेतु कुल 4 विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें 2 सरकारी विद्यालय व 2 निजी विद्यालय शामिल किये गये।
5. शोधकार्य हेतु केवल 4 विद्यालयों के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

विश्लेषण

1 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यकमों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

क्र.सं.	चर	न्यादर्श सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	सह–सम्बंध गुणांक	सह–सम्बंध स्तर
1.	सामाजिक बुद्धि व व्यवहार	60		निम्न श्रेणी का धनात्मक
2.	दूरदर्शन का प्रभाव	60	+.086	सह सम्बंध

तालिका के अनुसार सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यकमों के मध्य निम्न श्रेणी का धनात्मक सहसम्बंध पाया गया है। तालिका में गणना द्वारा प्राप्त प्राप्त सह–सम्बंध .086 हैं।

यहां विद्याथियों की समाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन का न्यूनतम प्रभाव पाया गया है।

2 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्रों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यकमों का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

क्र.सं.	चर	न्यादर्श सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	सह–सम्बंध गुणांक	सह–सम्बंध स्तर
1.	सामाजिक बुद्धि व व्यवहार	30	–.079	निम्न श्रेणी का धनात्मक सह–सम्बंध
2.	दूरदर्शन का प्रभाव	30		

तालिका के अनुसार सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा तालिका में गणना द्वारा प्राप्त सह–सम्बंध .079 है। यहां पर सरकारी विद्यालय के छात्रों सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन का न्यूनतम प्रभाव पाया गया है।

3 माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

क्र.सं.	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
1	सरकारी विद्यालय के छात्र	30	87.5	3.78	
2	निजी विद्यालय के छात्र	30	86.1	4.98	1.04

उपर्युक्त तालिका सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों बुद्धि व व्यवहार से सम्बन्धित है। स्वतंत्रता के चर 58 के लिए टी तालिका मूल्य .05 स्तर पर 2.00 तथा .01 स्तर पर 2.66 है। गणना करने पर टी का मूल्य 1.04 प्राप्त हुआ, जो .05 व .01 दोनों स्तर के मान से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है, इसका तात्पर्य है कि सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

निष्कर्ष

1 प्राप्त तथ्यों के आधार पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यकमों का न्यूनतम प्रभाव पाया गया, क्योंकि दोनों चरों के मध्य सहसम्बंध ज्ञात करने पर सहसम्बंध गुणांक 0.86 प्राप्त हुआ जो कि गिलफोर्ड तालिका के अल्पकोटि सहसम्बन्ध .25 से कम है।

2 प्राप्त तथ्यों के आधार पर पाया गया निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कार्यकमों का न्यूनतम प्रभाव पाया गया, क्योंकि दोनों चरो के मध्य सहसम्बंध ज्ञात करने पर सहसम्बंध गुणांक 0.039 प्राप्त हुआ जो कि गिलफोर्ड तालिका के अन्पकोटि सहसम्बंध .25 से कम है।

3 प्राप्त तथ्यों के आधार पर पाया गया सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि व उनके व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता

है, क्योंकि स्वतंत्रता के चर 58 के लिए 'टी' तालिका मूल्य .05 स्तर पर 2.00 तथा .01 स्तर पर 2.66 प्राप्त हुआ। गणना करने पर ष्टीष का मूल्य 1. 04 प्राप्त हुआ जो .05 व .01 दोनों स्तर के नाम से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ की सूची

गुप्ता, डॉ. बलदेवराज (2007) 'भारत के जनसम्पर्क' विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

कपिल, एच.के. (2007) 'रिसर्च मैथड्स' एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा

कुलकर्णी, डॉ.टी.न. 'शैक्षिक प्रौद्योगिकी' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

श्रीवास्तव, डी.एन. (1994) 'मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन' परिहार, एम 'ए स्टडी ऑफ एफ्केट ऑफ मीडिया आन स्टूडेन्ट लर्निंग'

मेनन, नारायण (1985) 'संचार क्रांति' नैशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली

यंग माश्कल (1965) 'इनोवशन एण्ड रिसर्च इन एजुकेशन' लंदन।

बुच. एम.बी. (1987) 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन' एन.सी.ई.आर.टी, न्यू देहली

ढोढियाल एवं फाटक (2005) 'शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

सरीन एण्ड सरीन (2006) 'शैक्षिक अनुंसधान की विधिया' वेदान्त पब्लिकेशन, आगरा

दुबें, प्रो. श्यामचरण 'संचार और विकास' प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

शर्मा विरेन्द्र प्रकाश 'रिसर्च मैथाडॉलोजी' पंचशील प्रकाश जयपुर।

भटनागर सुरेश अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार लॉयल बुक डिपों